IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 8, June 2025
Impact Factor: 7.67

भारत में सतत आजीविका के लिए कौषल विकास (विशेष रुप से प्राचीन काल से आधुनिक काल तक के संदर्भ में)

डॉ नीलम
एसोसिएट प्रोफेसर
, अपेक्स यूनिवर्सिटी, जयपुर।

प्रस्तावनाः– सतत आजीविका के लिए कौशल विकास की भूमिका

सतत एवं टिकाऊ आजीविका के लिए कौशल विकास पर्यावरणीय स्थिरता, सामाजिक समानता और लचीलेपन को बढ़ावा देते हुए आर्थिक रूप से आगे बढ़ने के लिए आवश्यक ज्ञान और क्षमताओं के साथ व्यक्तियों और समुदायों को सशक्त बनाने पर केंद्रित है। यह ऐसे अवसर पैदा करने का एक अनिवार्य हिस्सा है जो गरीबी को कम करता है, आर्थिक स्वतंत्रता को बढ़ावा देता है और यह सुनिश्चित करता है कि लोग प्राकृतिक संसाधनों को कम किए बिना या पर्यावरण को नुकसान पहुंचाए बिना आजीविका कमा सकें। कौशल विकास (सस्टेनेबल स्किल डपलपमेंट) किसी भी देश के सामाजिक और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह न केवल रोजगार के अवसर बढ़ाता है, बल्कि सतत आजीविका (सस्टेनेबल स्किल डपलपमेंट) को भी सुनिश्चित करता है। वर्तमान समय में तकनीकी प्रगति और वैश्वीकरण के कारण रोजगार के स्वरूप में तेज़ी से बदलाव हो रहा है, जिससे नई पीढ़ी को उन्नत और व्यावहारिक कौशल सीखने की आवश्यकता है। यह शोधपत्र कौशल विकास और सतत आजीविका के बीच संबंधों को स्पष्ट करता है, भारत सरकार की नीतियों का विश्लेषण करता है और इस क्षेत्र में मौजूद चुनौतियों व उनके संभावित समाधानों पर प्रकाश डालता है।

1. कौशल विकास और सतत आजीविका की परिभाषा

कौशल विकासः यह एक सतत प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति को विभिन्न तकनीकी, व्यावसायिक, और उद्यमिता कौशल प्रदान किए जाते हैं ताकि वे आत्मनिर्भर बन सकें और बदलते श्रम बाजार की आवश्यकताओं को पूरा कर सकें।

सतत आजीविकाः यह वह आजीविका है जो दीर्घकालिक रूप से पर्यावरण के अनुकूल, आर्थिक रूप से स्थिर और सामाजिक रूप से न्यायसंगत हो। यह केवल रोजगार तक सीमित नहीं है, बल्कि लोगो ंकी समग्र आर्थिक और सामाजिक स्थिरता को भी सुनिश्चित करता है।

इस संदर्भ में कौशल विकास के लिए कई प्रमुख क्षेत्र यहां दिए गए हैंः

1. हरित और सतत कौशल

- **नवीकरणीय ऊर्जाः** सौर, पवन और अन्य नवीकरणीय ऊर्जा प्रौद्योगिकियों में लोगों को प्रशिक्षण देने से स्वच्छ ऊर्जा में परिवर्तन का समर्थन करते हुए रोजगार पैदा हो सकते हैं। सतत कृषिः जैविक खेती, जल–कुशल सिंचाई तकनीक, कृषि

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 8, June 2025 Impact Factor: 7.67

वानिकी और फसल विविधीकरण सिखाने से लोगों को पर्यावरण की रक्षा करते हुए स्थायी आजीविका कमाने में मदद मिल सकती है।

- **अपशिष्ट प्रबंधन और पुनर्चक्रणः** छंटाई, पुनर्चक्रण, खाद बनाने और अपशिष्ट–से–ऊर्जा प्रक्रियाओं में कौशल समुदायों को अपशिष्ट को कम करने और नए आर्थिक अवसर पैदा करने में मदद कर सकते हैं।
- **इको–टूरिज्मः** इको–टूरिज्म, टिकाऊ यात्रा और जिम्मेदार आतिथ्य प्रबंधन में व्यक्तियों को प्रशिक्षण देने से स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र को संरक्षित करते हुए रोजगार पैदा हो सकते हैं।
-

2. व्यावसायिक और तकनीकी कौशल

- **भवन और निर्माणः** ऊर्जा–कुशल भवन डिजाइन, निर्माण और घरों और इमारतों की रेट्रोफिटिंग में कौशल हरित बुनियादी ढांचे में योगदान कर सकते हैं।
- **जल प्रबंधनः** कृषि और शहरी दोनों जरूरतों को पूरा करने के लिए जल संरक्षण, शुद्धिकरण और प्रबंधन में कौशल विकसित करना।
- **मरम्मत और रखरखावः** व्यक्तियों को उपकरणों, वाहनों और अन्य उपकरणों की मरम्मत और रखरखाव करना सिखाने से अपशिष्ट को कम किया जा सकता है और आय–सृजन के अवसर प्रदान किए जा सकते हैं।

3. स्वास्थ्य और कल्याण कौशल

मानसिक स्वास्थ्य और कल्याणः मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक कल्याण को संबोधित करना लचीले समुदायों को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है जो आर्थिक, पर्यावरणीय और सामाजिक चुनौतियों का सामना कर सकते हैं।

सतत आजीविका में कौशल विकास की भूमिका

- ❖ रोज़गार सृजनः कौशल विकास युवाओं को उद्योगों के लिए तैयार करता है, जिससे उन्हें बेहतर रोजगार के अवसर मिलते हैं।
- ❖ गरीबी उन्मूलनः गरीब और वंचित समुदायो ंको प्रशिक्षण देकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है।
- ❖ महिला सशक्तिकरणः महिलाओं को स्वरोजगार और व्यावसायिक प्रशिक्षण देकर उनकी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ किया जा सकता है।
- ❖ तकनीकी बदलाव के साथ तालमेलः डिजिटल और हरित नौकरियों के लिए नए कौशल की आवश्यकता होती है, जिससे सतत विकास संभव हो सकता है।

4. सतत आजीविका के लिए आवश्यक कौशल

- ➢ **तकनीकी कौशलः** आईटी, मशीन लर्निंग, डेटा एनालिटिक्स, साइबर सुरक्षा।
- ➢ **हरित (ग्रीन) कौशलः** सौर ऊर्जा, अपशिष्ट प्रबंधन, जैविक खेती।
- ➢ **उद्यमिता कौशलः** स्टार्टअप, लघुउद्योग, डिजिटल मार्केटिंग।
- ➢ **कृषि और ग्रामीण कौशलः** बागवानी, डेयरी, मधुमक्खी पालन।
- ➢ **सेवा क्षेत्र के कौशलः** स्वास्थ्य सेवा, पर्यटन, हस्तशिल्प।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 8, June 2025
Impact Factor: 7.67

5. भारत में कौशल विकास से संबंधित सरकारी योजनाएँ

- **प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना** : युवाओं को व्यावसायिक प्रशिक्षण देकर उन्हें रोज़गार के योग्य बनाना।
- **दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना** : ग्रामीण युवाओं को विशेष प्रशिक्षण प्रदान करना।
- **राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन** : महिलाओं को स्वरोजगार और स्वयं सहायता समूहों से जोड़ना।
- **अटल नवाचार मिशन** : स्टार्टअप्स और नवाचार को बढ़ावा देना।

6. कौशल विकास से जुड़ी चुनौतियाँ

- **शिक्षा और प्रशिक्षण की कमी** : ग्रामीण क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण उपलब्ध नहीं है।
- **तकनीकी ज्ञान की कमी** : डजिटल और तकनीकी प्रशिक्षण तक सभी की पहुँच नहीं है।
- **रोज़गार और कौशल में असमानता** :कई बार प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद भी रोजगार के अवसर सीमित होते हैं।
- **नीतियों और कार्यान्वयन में अंतर** :सरकारी योजनाएँ सही तरीके से लागू नहीं हो पातीं।

7. समाधान और सुझाव

- स्थानीय उद्योगों के साथ साझेदारी :कंपनियों और शिक्षण संस्थानों के बीच तालमेल बढ़ाना।
- डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देनाः ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रमों को प्राथमिकता देना।
- व्यावसायिक शिक्षा को मुख्य धारा में लानाः स्कूल–कॉलेजों में ही व्यावसायिक प्रशिक्षण देना।
- लघु एवं मध्यम उद्यमों को बढ़ावा देनाः स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर उत्पन्न करना।
- हरित रोजगार को प्राथमिकता देनाः पर्यावरण के अनुकूल तकनीकों को अपनाना।

सस्टेनेबल डेवलपमेंट का ऐतिहासिक महत्व

प्राचीन भारत में सतत विकास (सस्टेनेबल डेवलपमेंट) जीवनशैली का एक अभिन्न हिस्सा था, जहाँ प्रकृति और मानव गतिविधियों के बीच संतुलन बनाए रखने पर जोर दिया जाता था। इसे विभिन्न तरीकों से अपनाया गया था, जिससे दीर्घकालिक पारिस्थितिक संतुलन, सामाजिक स्थिरता और आर्थिक समृद्धि सुनिश्चित की जा सके। यहाँ प्राचीन भारत में सतत विकास के कुछ प्रमुख प्रकार और उनके उदाहरण दिए गए हैं:

1. ''कृषि में स्थिरता''

– ''फसल चक्र और मिश्रित खेती'': मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने के लिए फसल चक्र और मिश्रित खेती की जाती थी।
– ''जैविक खेती'': प्राकृतिक उर्वरकों जैसे गोबर खाद और हरी खाद का उपयोग किया जाता था।
– ''उदाहरण'': 'वृक्षायुर्वेद', एक प्राचीन भारतीय ग्रंथ, मिट्टी संरक्षण, खाद निर्माण और प्राकृतिक कीट नियंत्रण जैसी टिकाऊ कृषि पद्धतियों का वर्णन करता है।

IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429

Volume 5, Issue 8, June 2025

Impact Factor: 7.67

2. ''जल संरक्षण और प्रबंधन''

– ''बावड़ी और तालाब'': जल संरक्षण के लिए 'बावड़ी', 'कुंड', और 'जोहड़' जैसे जल संरचनाओं का निर्माण किया जाता था।

– ''उदाहरण'': राजस्थान में स्थित 'चाँद बावड़ी', जो भारत की सबसे गहरी बावड़ियों में से एक है, शुष्क क्षेत्रों में जल संरक्षण के लिए बनाई गई थी।

3. ''वन संरक्षण और वृक्षारोपण''

– ''पवित्र उपवन (ैंबतमक ळतवअमे)'': कुछ जंगलों और पेड़ों को पवित्र माना जाता था और धार्मिक एवं सामाजिक परंपराओं के माध्यम से उनकी रक्षा की जाती थी।

– ''उदाहरण'': राजस्थान की 'बिश्नोई' समुदाय सदियों से पर्यावरण संरक्षण और वन्यजीवों की रक्षा कर रही है।

4. ''सतत नगर नियोजन''

– ''सुनियोजित नगर'': मोहनजोदड़ो और हड़प्पा जैसी प्राचीन नगरों में उन्नत जल निकासी और स्वच्छता प्रणालियाँ थीं, जिससे प्रदूषण कम होता था।

– ''उदाहरण'': 'धोलावीरा', सिंधु घाटी सभ्यता का एक शहर, वर्षा जल संचयन की उत्कृष्ट प्रणाली के लिए प्रसिद्ध था।

5. ''नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग''

– ''सौर और पवन ऊर्जा'': प्राचीन भारतीय सूर्य ऊर्जा का उपयोग सुखाने, गर्म करने और पकाने के लिए करते थे।

– ''उदाहरण'': मंदिरों और घरों को इस तरह से डिज़ाइन किया जाता था कि प्राकृतिक प्रकाश और वेंटिलेशन का अधिकतम उपयोग हो, जिससे ऊर्जा की बचत होती थी।

6. ''पारंपरिक चिकित्सा और सतत स्वास्थ्य प्रणाली''

– ''आयुर्वेद'': औषधीय पौधों के उपयोग को प्रोत्साहित किया जाता था, जिससे जैव विविधता और सतत स्वास्थ्य प्रणाली को बढ़ावा मिलता था।

– ''उदाहरण'': 'चरक संहिता', एक प्राचीन आयुर्वेदिक ग्रंथ, समग्र स्वास्थ्य और संसाधनों के टिकाऊ उपयोग पर बल देता है।

7. ''सतत वस्त्र और हस्तकला उद्योग''

– ''हथकरघा और प्राकृतिक रंग'': पारंपरिक रूप से पौधों से प्राप्त रंगों और हाथ से बुने कपड़ों का उपयोग किया जाता था, जिससे औद्योगिक अपशिष्ट नहीं होता था।

– ''उदाहरण'': 'खादी', एक पारंपरिक हाथ से बुना कपड़ा, पर्यावरण के अनुकूल तकनीकों का उपयोग करके बनाया जाता था।

8. ''पशु और जैव विविधता संरक्षण''

– ''अहिंसा का सिद्धांत'': प्राचीन भारतीय परंपराओं में सभी जीवों की रक्षा पर बल दिया गया था।

– ''उदाहरण'': सम्राट 'अशोक' ने कुछ विशेष प्रजातियों के शिकार पर प्रतिबंध लगाया और वन्यजीव अभयारण्यों की स्थापना की।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 8, June 2025 Impact Factor: 7.67

प्राचीन भारत की ये प्रथाएँ पूरी तरह से स्थिरता (सस्टेनेबिलिटी) के अनुरूप थीं, जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग जिम्मेदारीपूर्वक किया जाए और आने वाली पीढ़ियों के लिए उन्हें संरक्षित रखा जाए। इन पारंपरिक तरीकों का आधुनिक पर्यावरण संरक्षण में भी महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है।

❖ **भारत में भावी भविष्य में सतत स्थायी आजीविका के लिए निम्न कदम उठाये जा सकते है—**

कौशल विकास आर्थिक और पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देते हुए स्थिर, दीर्घकालिक रोजगार सुरक्षित करने के लिए व्यक्तियों को आवश्यक कौशल से लैस करने पर केंद्रित है। यह गरीबी उन्मूलन, आर्थिक विकास और सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

सतत आजीविका के लिए कौशल विकास के प्रमुख पहलू

1. **मांग—संचालित कौशल की पहचान करना**—मांग में कौशल निर्धारित करने के लिए उद्योग के रुझानों का विश्लेषण करना। कृषि, नवीकरणीय ऊर्जा, स्वास्थ्य देखभाल और डिजिटल प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में व्यावसायिक और तकनीकी प्रशिक्षण को बढ़ावा देना। सांस्कृतिक स्थिरता का समर्थन करने के लिए स्थानीय शिल्प और पारंपरिक कौशल को प्रोत्साहित करना।

•2.**कौशल संवर्धन कार्यक्रम**—तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण (टीवीईटी) कार्यक्रम पेश करना। स्व—रोज़गार को बढ़ावा देने के लिए उद्यमशीलता कौशल विकसित करना। बेहतर संसाधन प्रबंधन के लिए वित्तीय साक्षरता प्रशिक्षण प्रदान करना। उभरते नौकरी बाजार में अनुकूलनशीलता के लिए डिजिटल कौशल को प्रोत्साहित करना।•

3.सतत रोजगार के अवसर—नवीकरणीय ऊर्जा, अपशिष्ट प्रबंधन और टिकाऊ खेती में हरित नौकरियों को बढ़ावा देना। स्थानीय आर्थिक विकास के लिए सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) को समर्थन देना। कौशल निर्माण कार्यक्रमों में महिलाओं और हाशिए पर रहने वाले समूहों की भागीदारी बढ़ाना।

4.प्रौद्योगिकी और नवाचार का एकीकरण—सुलभ कौशल प्रशिक्षण के लिए ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफार्मों का लाभ उठाना। कौशल मानचित्रण और कैरियर मार्गदर्शन के लिए एआई और स्वचालन का उपयोग करना। सटीक खेती और हाइड्रोपोनिक्स जैसी नवीन कृषि पद्धतियों को प्रोत्साहित करना।

5.सरकारी और संस्थागत समर्थन—कौशल विकास के लिए नीतिगत ढांचे को लागू करना। प्रशिक्षण पहल के लिए निजी क्षेत्रों, गैर सरकारी संगठनों और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ सहयोग करना। कौशल—आधारित शिक्षा का समर्थन करने के लिए वित्तीय सहायता और प्रोत्साहन प्रदान करना।

7. निष्कर्ष

कौशल विकास किसी भी देश के आर्थिक और सामाजिक विकास का आधार होता है। यदि सही नीति और प्रशिक्षण कार्यक्रमों को प्रभावी ढंग से लागू किया जाए, तो सतत आजीविका को सुनिश्चित किया जा सकता है। सरकार, उद्योग और शैक्षणिक संस्थानों को मिलकर कार्य करना होगा ताकि कौशल विकास केवल रोजगार तक सीमित न रहे, बल्कि सतत और पर्यावरण—सम्मत आर्थिक गतिविधियों में भी योगदानदे। यह शोध दर्शाता है कि कैसे कौशल विकास को सही दिशा में ले जाकर सतत आजीविका को बढ़ावा दिया जा सकता है। टिकाऊ आजीविका के लिए कौशल को बढ़ावा देने के लिए एक एकीकृत दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है, जिसमें स्थिरता सिद्धांतों, पर्यावरण जागरूकता और सामाजिक समानता के व्यापक ज्ञान के साथ तकनीकी कौशल का संयोजन

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 8, June 2025 Impact Factor: 7.67

होता है। व्यक्तियों को स्थायी रूप से जीने के लिए सशक्त बनाने वाले कौशल पर ध्यान केंद्रित करके, समुदाय अपने स्वयं के आर्थिक कल्याण को सुरक्षित करते हुए एक स्वस्थ, अधिक लचीले ग्रह में योगदान कर सकते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ

1.भारत सरकार, कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय की आधिकारिक रिपोट्र्स।

2.अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन और विश्व बैंक की सतत आजीविका पर रिपोर्ट।

3.विभिन्न शोध–पत्र और नीति दस्तावेज।

4.आर्थिक समीक्षा 2022–23 अंक

5.आर्थिक समीक्षा 2023–24 अंक

6.प्राचीन भारत का इतिहस–षर्मा.व्यास।

7.प्राचीन भारत का इतिहास–प्रो0निकी चतुर्वेदी, प्रो0 के0जी0षर्मा

8.भारत का इतिहास–एम.एस.जैन